

General Psychology

Paper I

B.A. I (Honours)

(... continued)

Describe the major determinants of perceptual process

(with examples).

प्रत्यक्षणात्मक प्रक्रिया के प्रमुख निर्धारकों का उदाहरण सहित

वर्णन करें।

प्रत्यक्षण एक ऐसी संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हमें उद्दीपनों का तात्कालिक ज्ञान होता है। जब यह ज्ञान अयथार्थ (inaccurate) होता है तो उसे भ्रम की संज्ञा दी जाती है। प्रत्यक्षण की कई विशेषताओं में एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसका स्वरूप चयनात्मक होता है। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति कई उद्दीपनों में से कुछ खास उद्दीपन का ही प्रत्यक्षण कर पाता है, अन्य सभी उद्दीपनों का नहीं। जैसे कक्षा में बैठ कर शिक्षक का व्याख्यान जब छात्र सुनते रहते हैं तो उस समय उस शिक्षक एवं उसकी बातों का ही वे प्रत्यक्षण कर पाते हैं, अन्य उद्दीपनों जैसे blackboard, fan, अपने अन्य साथियों आदि का नहीं। इसका स्पष्ट कारण यह है कि प्रत्यक्षण का स्वरूप चयनात्मक होता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि वे कौन कौन से कारक हैं जिनसे व्यक्ति का प्रत्यक्षण निर्धारित होता है, दूसरे शब्दों में वे कौन-कौन से कारक हैं जिनके कारण व्यक्ति उपस्थित कई उद्दीपनों में से कुछ खास-खास उद्दीपनों का प्रत्यक्षण कर के उसे अपने ध्यान केंद्र में ला पाता है। इसका मतलब यह हुआ कि प्रत्यक्षण की प्रक्रिया अवधान या ध्यान से काफी सम्बंधित है। हम पहले किसी उद्दीपन का प्रत्यक्षण करते हैं और फिर उस पर ध्यान देते हैं। मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गए शोधों से यह व्यक्त हुआ है कि प्रत्यक्षण में चयनात्मकता (selectivity) के दो निर्धारक हैं-

1) **बाह्य निर्धारक (external determinants)**

2) **आंतरिक निर्धारक (internal determinants)**

1) बाह्य निर्धारक (external determinants)-

प्रत्यक्षण के बाह्य निर्धारक में वैसे कारकों को रखा जाता है जो उद्दीपन से सम्बंधित होते हैं और व्यक्ति के प्रत्यक्षण को प्रभावित करते हैं। ऐसे कारकों में निम्नांकित प्रमुख हैं-

i) उद्दीपन की तीव्रता और आकार (intensity and size of stimulus)-

जब कोई उद्दीपन अधिक तीव्र होता है तो उसका प्रत्यक्षण हम मंद या काम तीव्र उद्दीपन की अपेक्षा जल्द कर लेते हैं। ऐसा इस लिए हो पाता है क्योंकि तीव्र उद्दीपन में मंद उद्दीपन की अपेक्षा आकर्षकता (attractiveness) अधिक होती है। यही कारण है की धीमे आवाज़ में यदि कोई पुकारता है तो उसका प्रत्यक्षण हम नहीं भी कर पाते हैं परन्तु तीव्र आवाज़ में पुकारने पर हम उसका प्रत्यक्षण निश्चित रूप से करते हैं। इसी तरह की बात उद्दीपन के आकार (size) के साथ होती है। बड़े आकार की वस्तुओं का प्रत्यक्षण छोटे आकार की वस्तुओं की अपेक्षा जल्द होता है। अखबार के पृष्ठ पर बड़े अक्षरों में छपी खबर का व्यक्ति छोटे अक्षरों में छपी खबरों की तुलना में जल्द प्रत्यक्षण कर लेता है।

ii) उद्दीपन में गति (movement in stimulus)-

जो उद्दीपन गतिशील होता है उसका प्रत्यक्षण अन्य स्थिर उद्दीपनों की अपेक्षा व्यक्ति जल्द कर लेता है। कहने का तात्पर्य यह है की गतिशील उद्दीपन को व्यक्ति अन्य उद्दीपनों जो गतिशील नहीं होते हैं की अपेक्षा प्रत्यक्षण के लिए चयनित कर लेते हैं। जैसे- यदि सड़क पर कई मोटर कारें लगी हो तो उनमें से जो कार चल रही हो उसका व्यक्ति जल्द प्रत्यक्षण कर लेता है क्योंकि वह कार गतिशील है। उद्दीपन में गतिशीलता होने से ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करने की क्षमता उसमें अधिक हो जाती है जिससे उसका प्रत्यक्षण व्यक्ति आसानी से कर लेता है।

iii) उद्दीपन की पुनरावृत्ति (repetition of stimulus)-

जब उद्दीपन व्यक्ति के सामने बार बार उपस्थित किया जाता है तो व्यक्ति उसका प्रत्यक्षण जल्द कर लेता है। जैसे- यदि एक अनुच्छेद में एक ही शब्द कई बार गलत लिखा गया हो तो उस शब्दका प्रत्यक्षण अन्य शब्दों की तुलना में जल्द हो जाता है क्योंकि उसमें पुनरावृत्ति का गुण मौजूद होता है जो अन्य शब्दों में नहीं है।

iv) उद्दीपन का रंग (colour of stimuli)-

रंगीन उद्दीपन का प्रत्यक्षण व्यक्ति अन्य मौजूद उद्दीपनों जो रंगीन नहीं होते हैं की अपेक्षा जल्द कर लेता है। इसका कारण यह है की रंगीन उद्दीपनों में व्यक्ति की ज्ञानेन्द्रिय अर्थार्थ आँख को अपनी ओर आकर्षित करने का गुण अधिक होता है। रंगीन पोस्टरों का व्यक्ति काले उजले में छपे पोस्टरों की अपेक्षा जल्द प्रत्यक्षण करता है।

v) **उद्दीपन की अवधी (duration of stimulus)-**

प्रत्यक्षण उद्दीपन की अवधी द्वारा भी प्रभावित होता है। जो उद्दीपन व्यक्ति के सामने छण भर आ कर लुप्त हो जाता है, संभव है की व्यक्ति उसका प्रत्यक्षण न भी कर पाए, परन्तु जब उद्दीपन अधिक समय तक व्यक्ति के सामने रह कर गुजरता है तो व्यक्ति उसका निश्चित एवं स्पष्ट प्रेताक्षण करता है।

2) **आंतरिक निर्धारक (internal determinants) -**

प्रत्यक्षण के आंतरिक निर्धारक में उन कारकों को रखा जाता है जो प्रत्यक्षानकर्ता (perceiver) से सम्बंधित होते हैं और व्यक्ति के प्रत्यक्षण को प्रभावित करते हैं। ऐसे कुछ प्रमुख निर्धारक निम्नांकित हैं-

i) **अभिरुचि (interest)-**

प्रत्यक्षानकर्ता की अभिरुचि एक महत्वपूर्ण कारक है जो प्रत्यक्षण को प्रभावित करता है। प्रत्यक्षानकर्ता की अभिरुचि जिस तरह के उद्दीपन में अधिक होती है वह उसका प्रत्यक्षण जल्द कर लेता है। जैसे- जिस किशोर की अभिरुचि किसी गाड़ी में अधिक होती है वह ऐसे गाड़ी का प्रत्यक्षण अन्य गाड़ियों की तुलना में तेज़ी से कर लेता है।

ii) **मनोवृत्ति (attitude)-**

व्यक्ति की मनोवृत्ति अर्जित होती है जो किसी उद्दीपन या वस्तु के प्रति प्रतिकूल हो सकती है या अनुकूल। प्रत्यक्षानकर्ता उन उद्दीपनों का प्रत्यक्षण जल्द कर लेता है जिनके प्रति उसकी मनोवृत्ति अनुकूल होती है। जैसे किसी पार्टी में किसी व्यक्ति की बहन तथा प्रेमिका दोनों ही शामिल हुयी हो तो व्यक्ति प्रेमिका का प्रत्यक्षण सामान्यतः पहले क्र लेता है जिसका कारण यह है की व्यक्ति की मनोवृत्ति प्रेमिका के प्रति अधिक अनुकूल होती है, जबकि बहन के प्रति उतना अनुकूल नहीं होती है।

iii) **आवश्यकता (need)-**

प्रत्यक्षानकर्ता अपनी आवश्यकता अनुसार उद्दीपन का चयन कर उसका प्रत्यक्षण करता है। जैसे- यदि व्यक्ति भूखा है तो वह अन्य उद्दीपनों की अपेक्षा खाने-पीने के उद्दीपनों का प्रत्यक्षण जल्द करेगा। उसी तरह से यदि कोई व्यक्ति कपडा खरीदने बाजार निकलता है तो वह कपडे की दूकान का प्रत्यक्षण अन्य दूसरी तरह की दुकानों की अपेक्षा जल्द कर लेता है। इन सबका कारण व्यक्ति की अपनी आवश्यकता है। आवश्यकता व्यक्ति को सम्बंधित उद्दीपनों का प्रत्यक्षण करने के लिए बाध्य कर देता है।

iv) **अर्थ (meaning)-**

व्यक्ति जिस उद्दीपन का अर्थ समझता है उसका प्रत्यक्षण वह अन्य उद्दीपनों जिनका अर्थ वह नहीं समझता है, की अपेक्षा जल्दी से कर लेता है। जैसे यदि कोई व्यक्ति बांग्ला भाषा जानता है तो उससे सम्बंधित किताब या बांग्ला में लिखे विज्ञापनों का प्रत्यक्षण अन्य भाषा में लिखे विज्ञापनों की अपेक्षा जल्द कर लेता है। अतः अर्थ एक ऐसा कारक है जिससे व्यक्ति का प्रत्यक्षण प्रभावित होता है।

v) **मानसिक वृत्ति (mental set)-**

मानसिक वृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति में किसी खास उद्दीपन के प्रति अनुक्रिया करने की तत्परता (readiness) से होता है। व्यक्ति की मानसिक वृत्ति जिस उद्दीपन की ओर होती है उसका प्रत्यक्षण वैसे उद्दीपनों की तुलना में जल्द कर लेता है जिसके प्रति उसकी मानसिक वृत्ति नहीं होती है। जैसे- यदि पत्नी अपने पति के द्वारा telephone किये जाने का इंतज़ार कर रही है तो telephone की घंटी बजते ही उसे अपने पति की याद आ जाती है, हलाकि संभव है की telephone करने वाला व्यक्ति कोई दूसरा हो। ऐसा इस लिए होता है क्योंकि इस तरह की घंटी के प्रति उस परिस्थिति में उसके मन में एक विशेष मानसिक वृत्ति उत्पन्न रहती है।

स्पष्ट हुआ की कई ऐसे कारक हैं जिनसे प्रत्यक्षण प्रभावित होता है। प्रत्यक्षण के स्वरूप को समझने के लिए यह आवश्यक है की इन निर्धारकों या कारकों पर ध्यान रखा जाए।

Dr. Hena Hussain

Assistant Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com